

मिस मूर का सोच ही कुछ अलग ही था!

मिस मूर ने कैसे अमरीका में, बच्चों की लाइब्रेरीज़ शुरू कीं

जैन पिंगबरो, चित्र: डेबी ऐटवाल



MISS MOORE THOUGHT OTHERWISE

written by JAN PINBOROUGH illustrated by DEBBY ATWELL

एक ज़माने में अमरीका में बच्चों को लाइब्रेरी की किताबें घर ले जाने की इजाज़त नहीं थी. बहुत सी लाइब्रेरीज़ में तो बच्चे घुस तक नहीं सकते थे. उस समय शिक्षकों का सोच इस प्रकार था

बच्चे अपने गंदे हाथों से, लाइब्रेरी की पुस्तकें बर्बाद कर देंगे.

बच्चे लाइब्रेरी की किताबें वापिस करना भूल जायेंगे.

बच्चों के लिए किताबें पढ़ना कोई खास ज़रूरी नहीं था - खासकर लड़कियों के लिए.

परन्तु मिस मूर का सोच कुछ अलग ही था. मिस मूर चाहती थीं कि बच्चों के लिए एक अलग कमरा हो - जहाँ खूब रोशनी आती हो, जो गर्म हो, जहाँ बच्चों के लिए छोटी कुर्सियां हों, खिड़कियों के पास बैठने की जगह हो. वो चाहती थीं कि बच्चे दुनिया की तमाम भाषायों की, सैकड़ों रंग-बिरंगी, बेहरतीन किताबें लाइब्रेरी से उधार लेकर घर ले जा सकें.



मिस मूर का सोच कुछ अलग ही था!

मिस मूर ने कैसे अमरीका में, बच्चों की लाइब्रेरीज़ शुरू कीं

जैन पिंगबरो, चित्र: डेबी ऐटवाल

हिंदी : विदूषक

MISS MOORE THOUGHT OTHERWISE



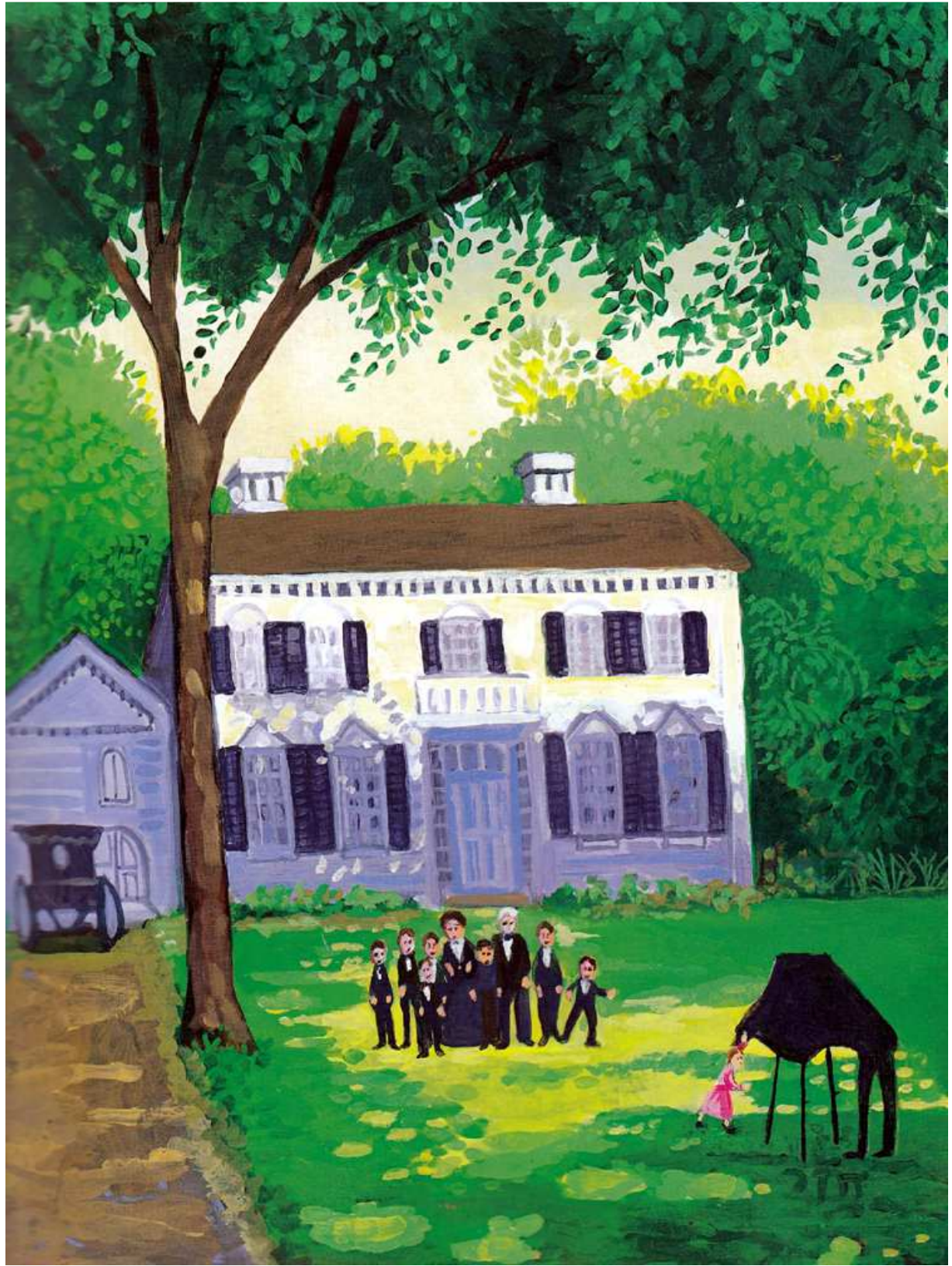
How Anne Carroll Moore Created Libraries for Children

Written by JAN PINBOROUGH

Illustrated by DEBBY ATWELL



लिमरिक, मेन, अमरीका में है. वहां एक बड़े घर में एक छोटी लड़की रहती थी. उसका नाम था एनी कैरॉल मूर. उसकी बड़ी-बड़ी आँखें, सिलेटी रंग की थीं. उसके सात बड़े भाई थे. पर एनी खुद खूब सोचती थी. उसके अपने पक्के विचार थे.





1870 में बहुत से लोगों का यही मानना था कि लड़कियों को घर के अन्दर ही रहना चाहिए - और उन्हें सिलाई-कढ़ाई जैसे घरेलू हुनर ही सीखने चाहिए.

पर एनी की सोच ही कुछ अलग थी. एनी बड़ी दबंग थी. एक पतली सी स्लेज पर वो कब्रिस्तान से मेन स्ट्रीट तक फिसलते हुए जाती थी. और पिता की घोड़ा गाड़ी पर सवारी करते वक्त वो घोड़े की पदचाल के साथ-साथ कूदती रहती थी.

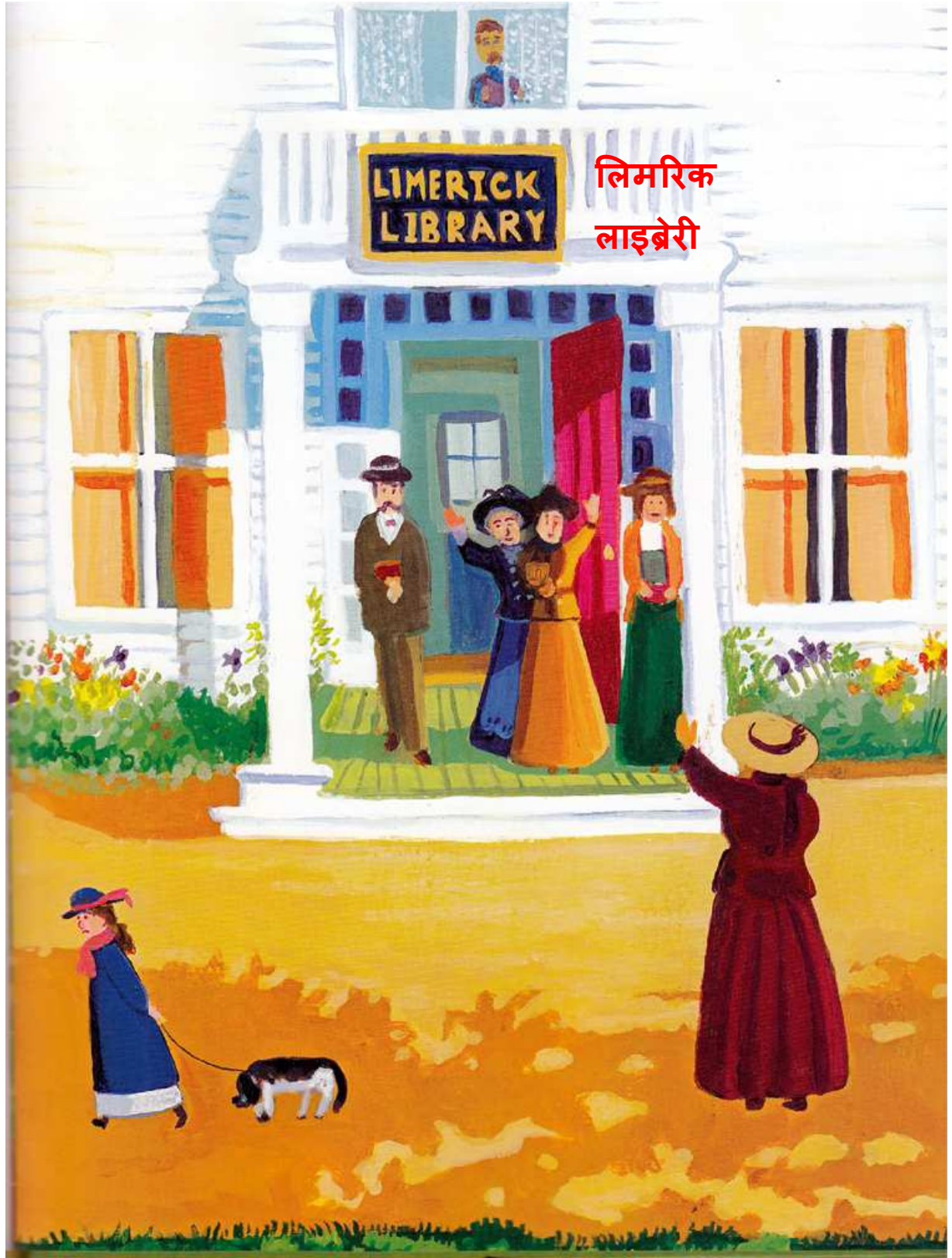
पेड़ों के झुरमुटों से एनी को दूर के सफ़ेद पहाड़ दिखाई देते थे. वो पहाड़ों के उस पार बसी दुनिया की कल्पना करती. भविष्य में वो क्या करेगी, वो उसके बारे में भी सोचती थी.

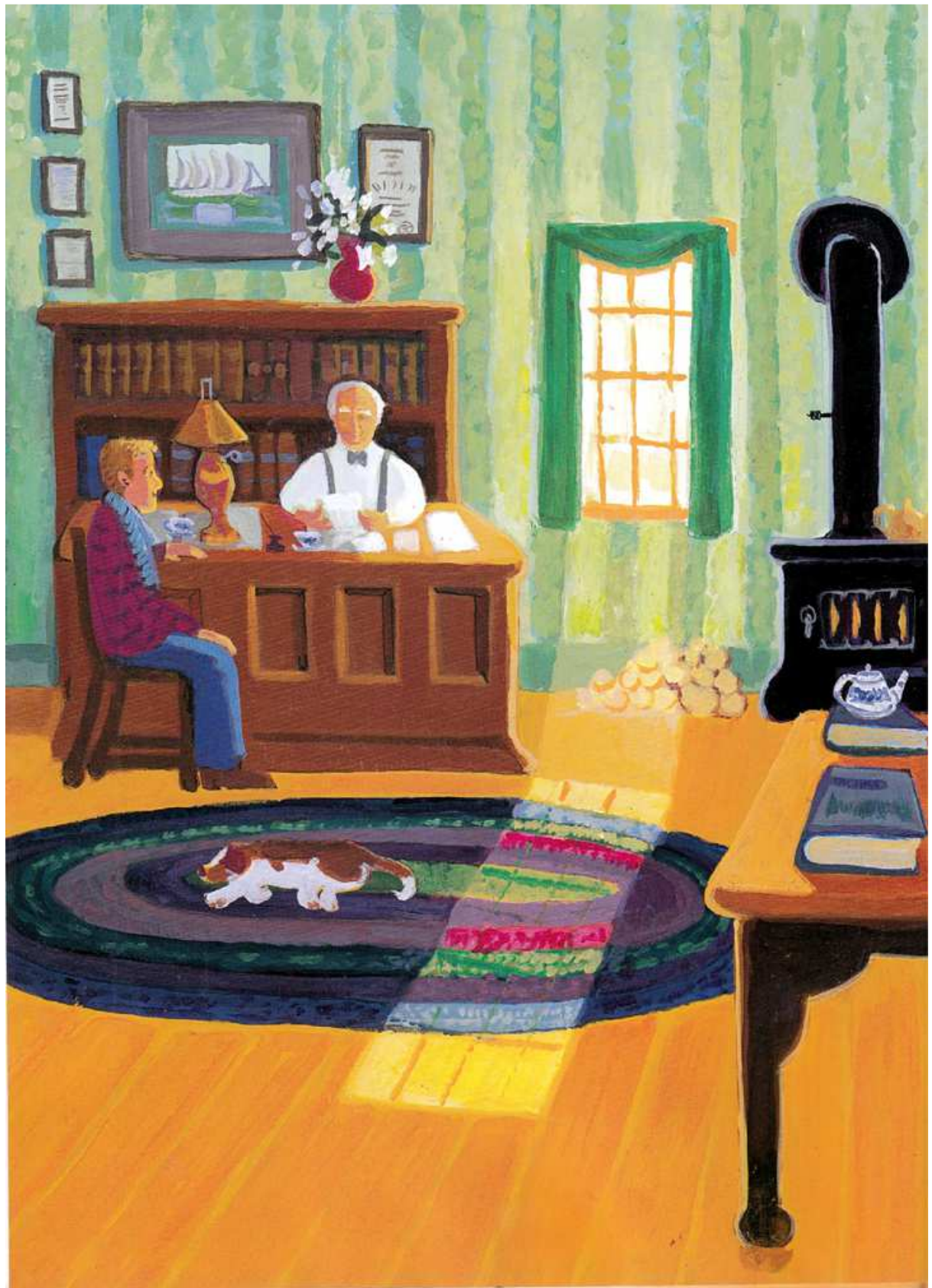


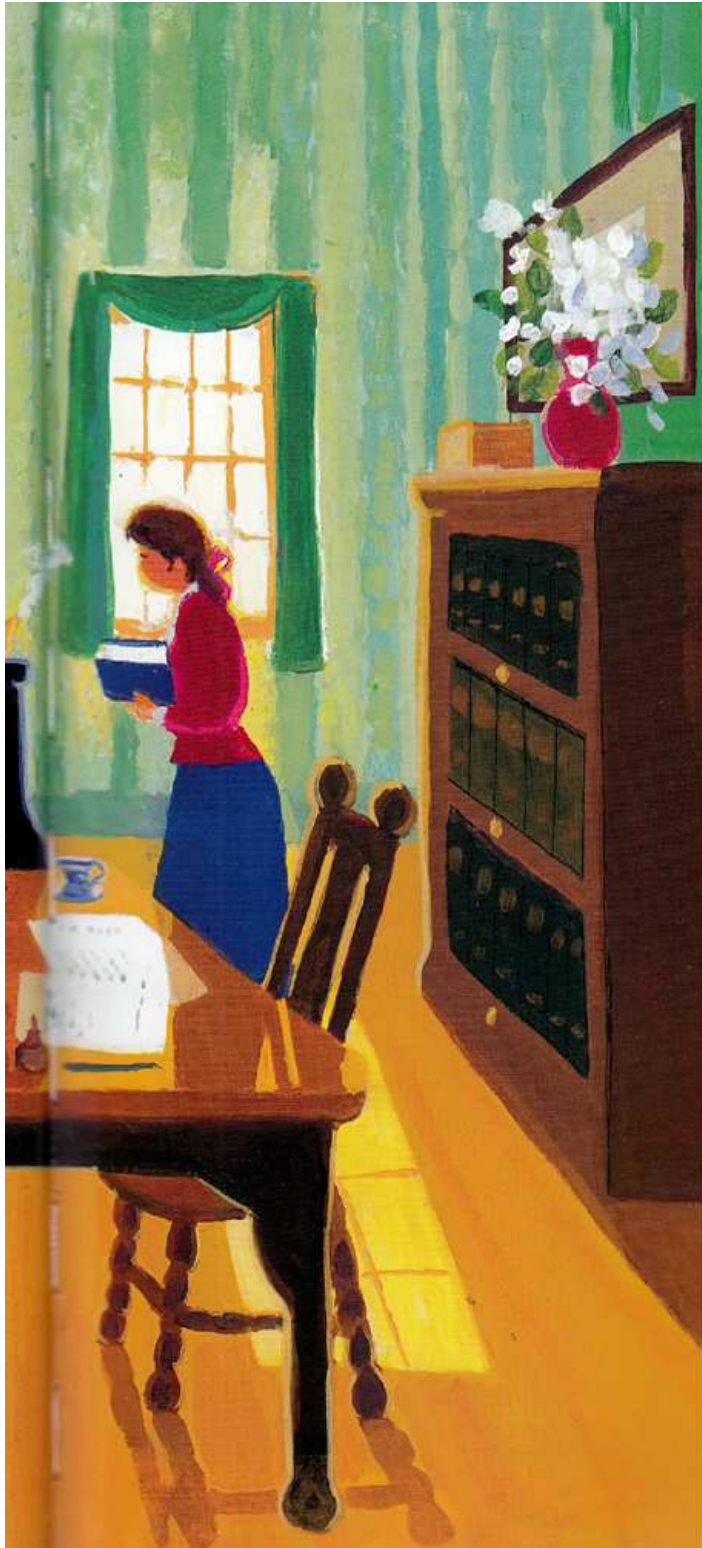


रात को खाने के बाद पिताजी उसे कहानियां और कवितायें सुनाते. वो एनी को बहुत पसंद आती थीं. बारिश वाले दिन वो ऊपर ताड़ पर चढ़ जाती और वहां बैठकर **सेंट निकोलस** पत्रिका के पुराने अंक पढ़ती थी.

उन दिनों बच्चों को लाइब्रेरी में घुसने तक की इजाज़त नहीं थी. तब बच्चे किताबें पढ़ें, यह ज़रूरी नहीं समझा जाता था - खासकर लड़कियों के लिए.







जब एनी 19 साल की हुई, तब तक उसकी हमउम्र बहुत सी लड़कियों की शादी हो गयी थी.

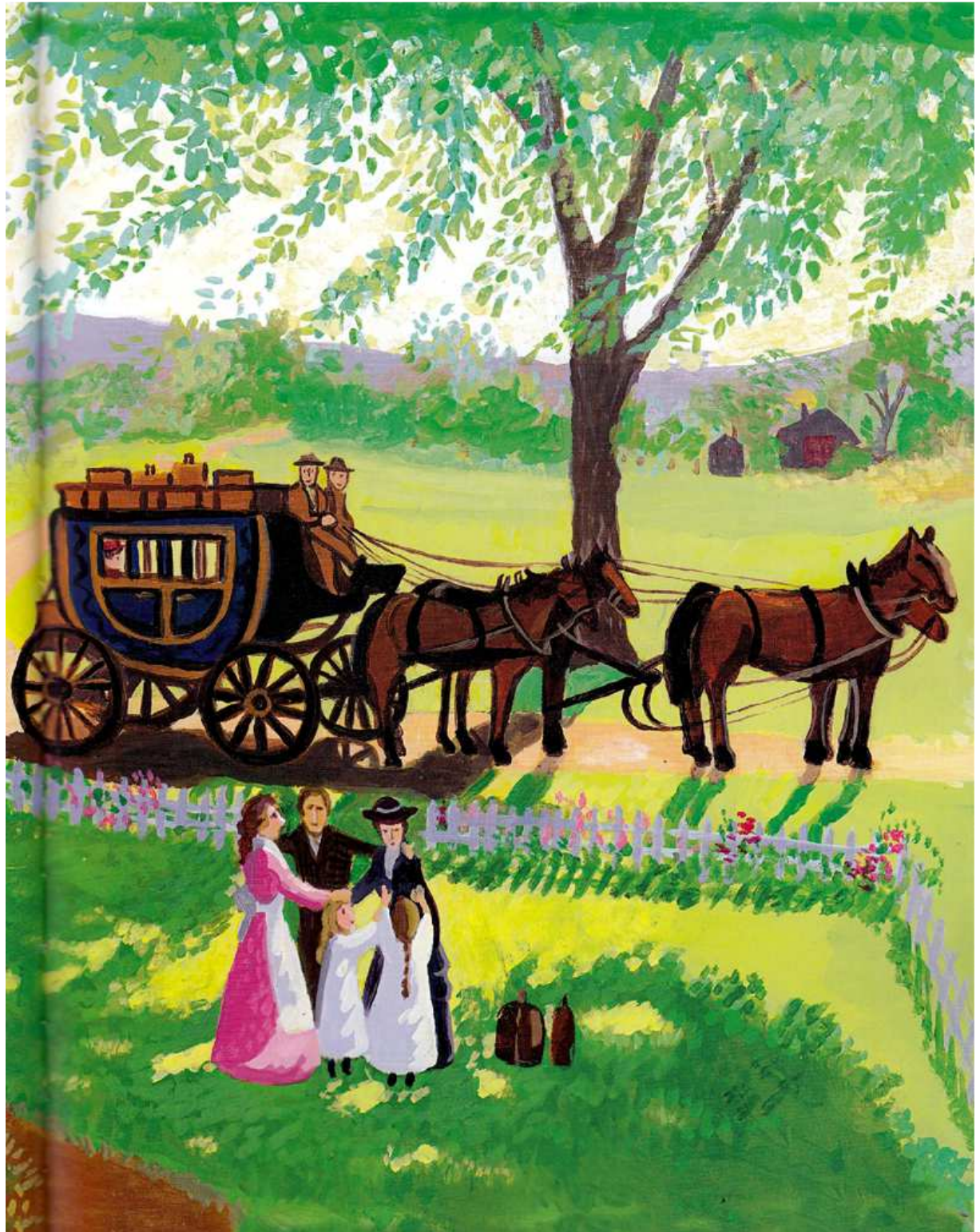
तब एनी जैसी अविवाहित लड़की अपने माता-पिता के घर की देखभाल ही कर सकती थी. या फिर वो टीचर या मिशनरी बन सकती थी.

पर एनी का सोच कुछ अलग ही था. उसने पिता की तरह वकील बनने की ठानी. उसके लिए वो रोज़ाना पिता के दफ्तर जाती और कानून के दांव-पेंच सीखती.

फिर अचानक एक ही हफ्ते एक अन्दर एनी के माता-पिता दोनों का, फलू से देहांत हो गया. कुछ दिनों बाद एनी के भाई की पत्नी चल बसी. फिर एनी अपनी दोनों छोटी भतीजियों की देखभाल करने के लिए घर पर ही रहती. सफ़ेद पहाड़ियों के उस पार जाने का उसका इरादा अभी पूरा नहीं होने वाला था.

कुछ समय बाद उसके भाई ने दुबारा शादी की. तभी एनी को एक खुशखबरी सुनाई दी. कुछ लाइब्रेरियां, महिला लाइब्रेरियंस को नौकरी दे रहीं थीं! फिर क्या था - एनी ने सामान बाँधा और ब्रुकलिन, न्यूयॉर्क पहुँची. वहां उसने प्रैट इंस्टिट्यूट लाइब्रेरी स्कूल में दाखिला लिया.

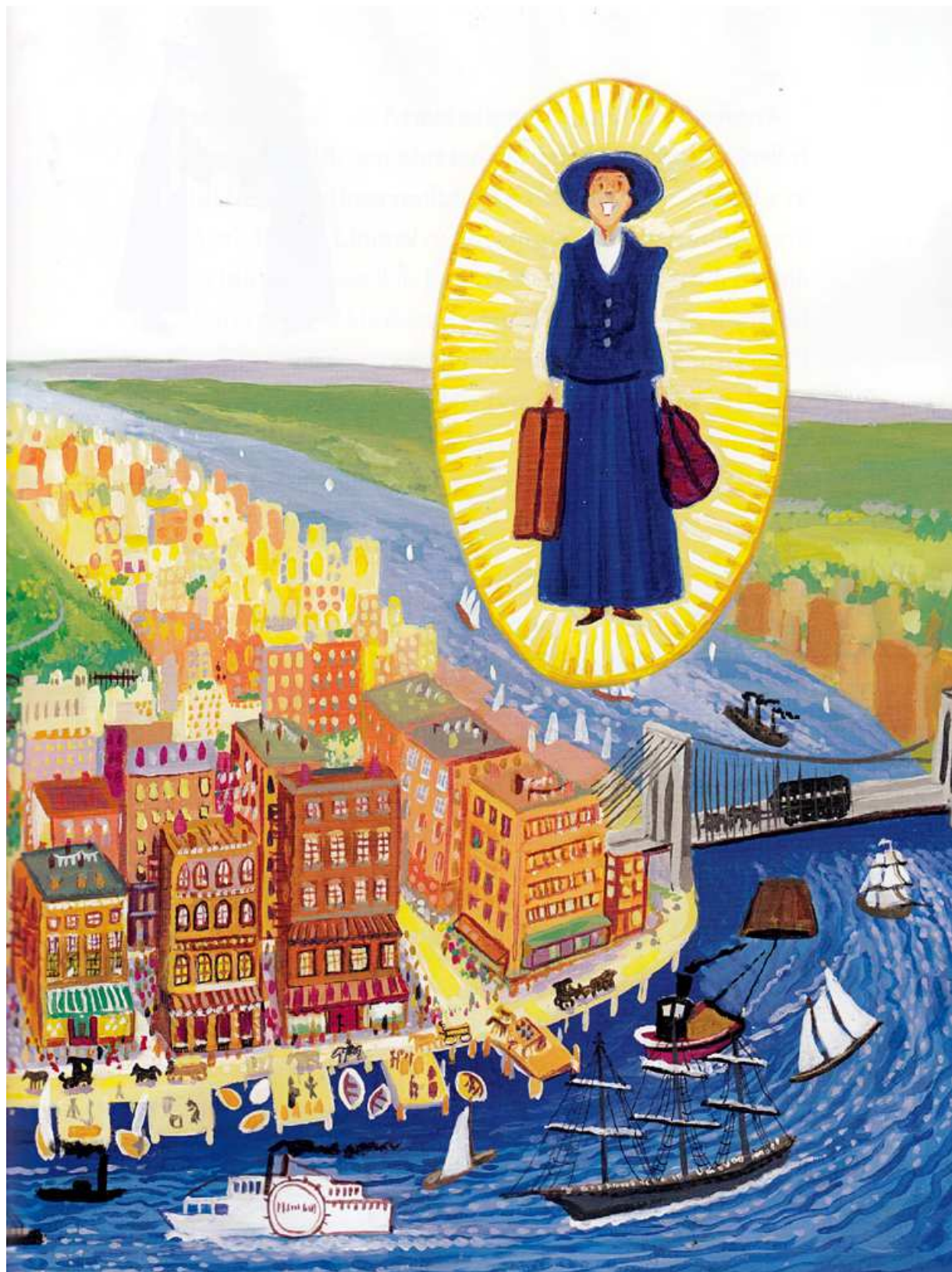




न्यूयॉर्क एक बहुत बड़ा शहर था. कुछ लोगों के अनुसार अकेली लड़की के रहने के लिए वो ठीक जगह नहीं थी.

पर एनी का सोच कुछ अलग ही था. उसे पत्थर की बनी व्यस्त सड़कों पर चलना, घूमना बहुत पसंद था. वो सर्कस और ओपेरा देखने जाती, और फिर घोड़ागाड़ी में बैठकर विशाल ब्रुकलिन पुल को पार करती.



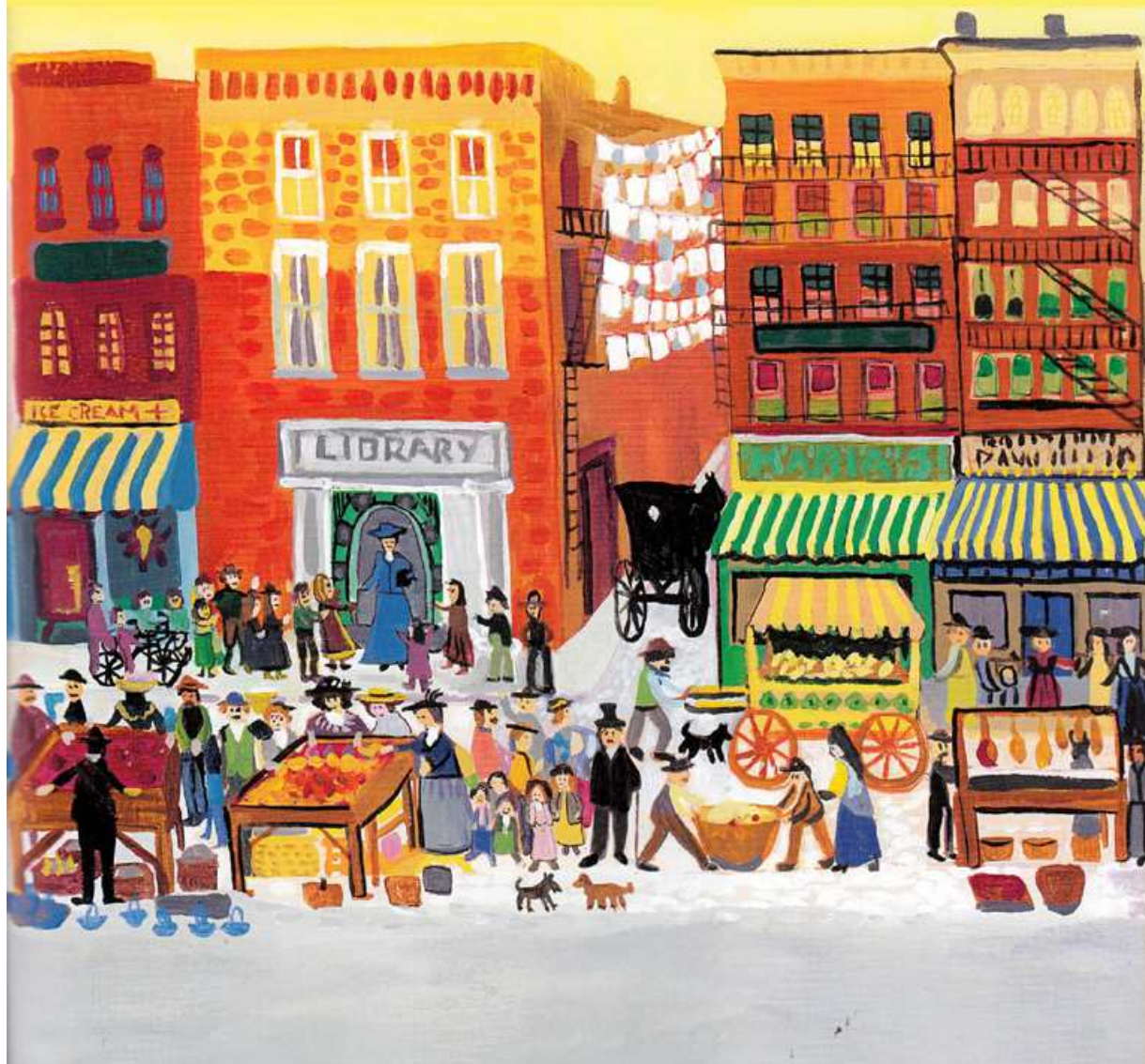


एनी ने बहुत मेहनत और लगन से पढाई की. लाइब्रेरी स्कूल से डिग्री हासिल करने के बाद उसे प्रैट फ्री लाइब्रेरी में लाइब्रेरियन की नौकरी मिली. तब कुछ लाइब्रेरीज ने, बच्चों को अन्दर आने की इज़ाज़त दे दी थी. पर एनी की लाइब्रेरी उन सबसे कई कदम आगे थी - उसमें बच्चों के लिए अलग से एक विशेष, नया कमरा बनाया गया था. यानि वहां बच्चों के लिए एक खास लाइब्रेरी कमरा था. वहां बच्चे खुद शेल्फ से किताबें चुन सकते थे. और शाम के वक्त एनी बच्चों को खुद कहानियां पढ़कर सुनाती थी - बिल्कुल वैसे ही, जैसे उसके पिता उसे कहानियां सुनाते थे.



धीरे-धीरे एनी की लाइब्रेरी की खबर चारों ओर फैली. फिर एक दिन डॉ. बोस्टविस्क ने, न्यूयॉर्क पब्लिक लाइब्रेरी की सभी छत्तीस शाखाओं में बच्चों के सेक्शन का काम, एनी को सौंपा.

मिस मूर अपनी सबसे बेहतरीन ड्रेस और टोपी पहनकर हर लाइब्रेरी - हार्लेम स्क्वायर से लेकर चैथम स्क्वायर तक का दौरा करतीं.



उन्होंने देखा कि बहुत सी लाइब्रेरियंस बच्चों को किताबें छूने तक नहीं देते थे. उन्हें डर था कि कहीं बच्चे किताबों के पन्नों को गन्दा न करें, और उनकी जिल्द न फाड़ें. वो सोचते कि अगर बच्चों को किताबें घर ले जाने दीं तो फिर बच्चे उन्हें कभी वापिस ही नहीं लौटायेंगे.



पर मिस मूर कुछ अलग ही सोचती थीं. उन्हें बच्चों पर विश्वास था, इसलिए उन्होंने एक मोटे रजिस्टर में यह प्रतिज्ञा लिखी:

इस रजिस्टर में अपना नाम लिखकर
मैं यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि:
मैं लाइब्रेरी और घर में, किताब की अच्छी देखभाल करूंगा.
मैं लाइब्रेरी के नियमों का भी पालन करूंगा.

मिस मूर ने लाइब्रेरियंस को, इस प्रतिज्ञा का उपयोग करने के लिए मनाया. उसके बाद से न्यूयॉर्क के सभी बच्चे लाइब्रेरी से किताबें उधार लेकर अपने घर ले जाने लगे.



मिस मूर ने कई और बड़े बदलाव लाने की कोशिश भी की। उस समय लाइब्रेरीज़ में जगह-जगह पर “**चुप बैठो**” के चिन्ह और बैनर लटके रहते थे। मिस मूर ने लाइब्रेरियंस पर दबाव डालकर उन बैनर्स को उतरवाया। उन्होंने लाइब्रेरियंस को बच्चों के साथ समय बिताने, और उन्हें कहानियां सुनाने की सलाह दी।

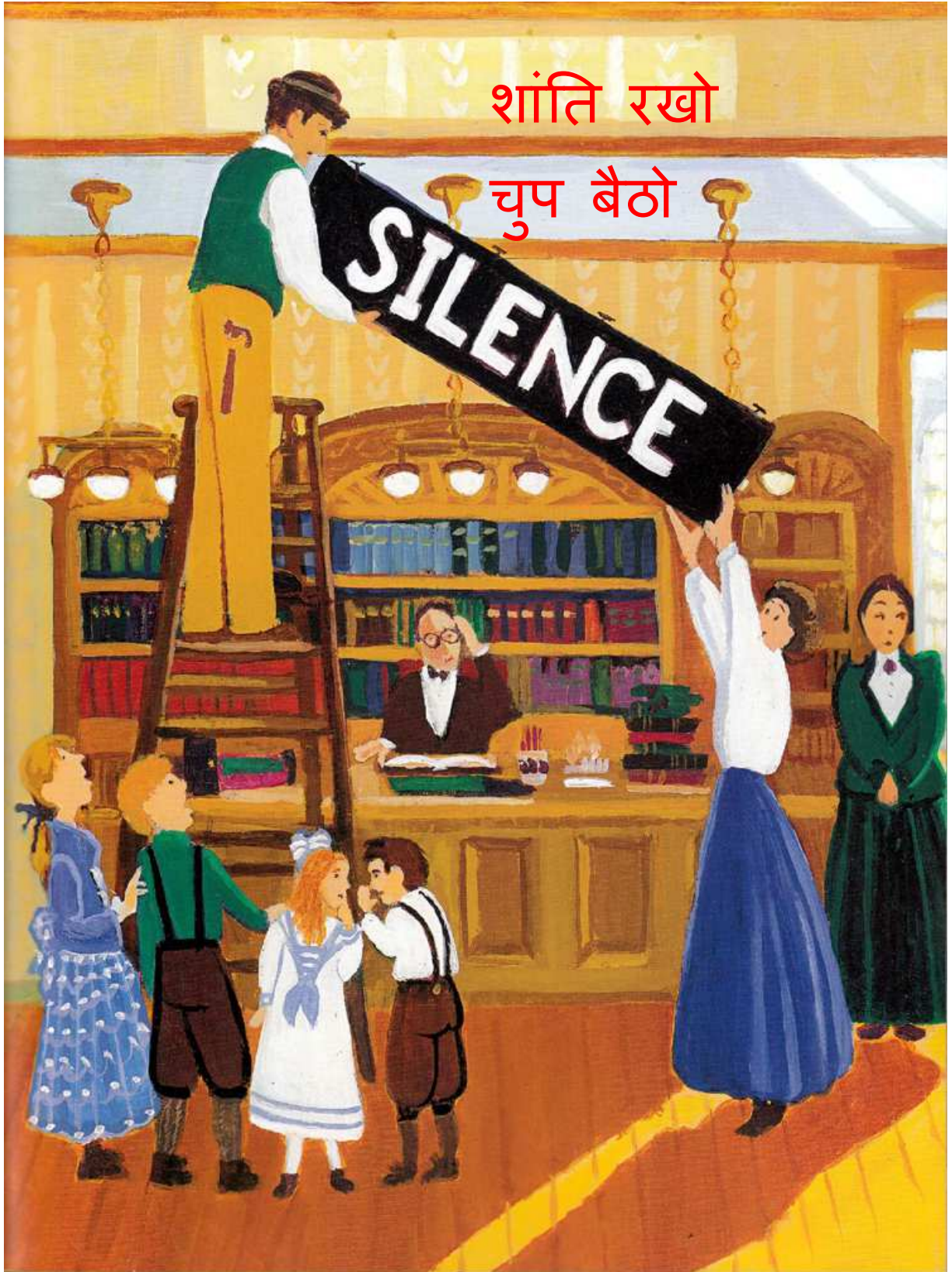
उन्होंने किताबों के शेल्फ से उबाऊ किताबें हटाकर वहां मजेदार और रोचक किताबें रखीं जैसे **टॉम सॉयर के कारनामे** और **द स्विस् फॅमिली रोबिनसन**।

उन्होंने किताबों की समीक्षाएं लिखीं और अच्छी पुस्तकों की सूचियाँ बनायीं जिससे पालकों, शिक्षकों और बच्चों को बेहतरीन पुस्तकें उपलब्ध हो सकें। उन्होंने प्रकाशकों को भी बच्चों की उम्दा किताबें छापने के लिए प्रोत्साहित किया।



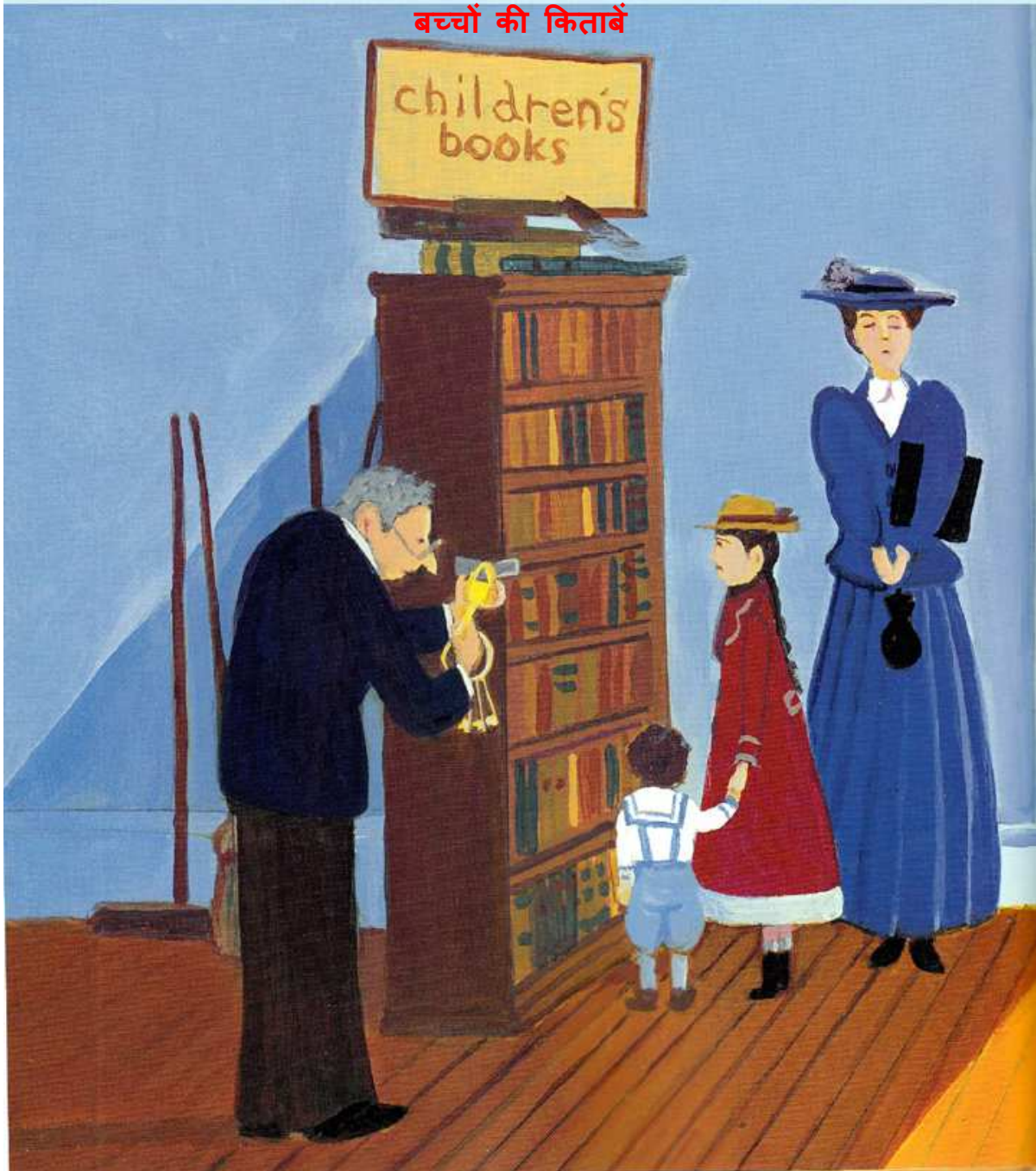
शांति रखो

चुप बैठो



इस सबके बावजूद बहुत सी लाइब्रेरीज़ बच्चों की किताबों को इल्मारी में बंद और तालों में कैद रखती थीं. अक्सर उनके पास शेल्फ पर रखने के लिए बच्चों की अच्छी किताबें होती ही नहीं थीं.

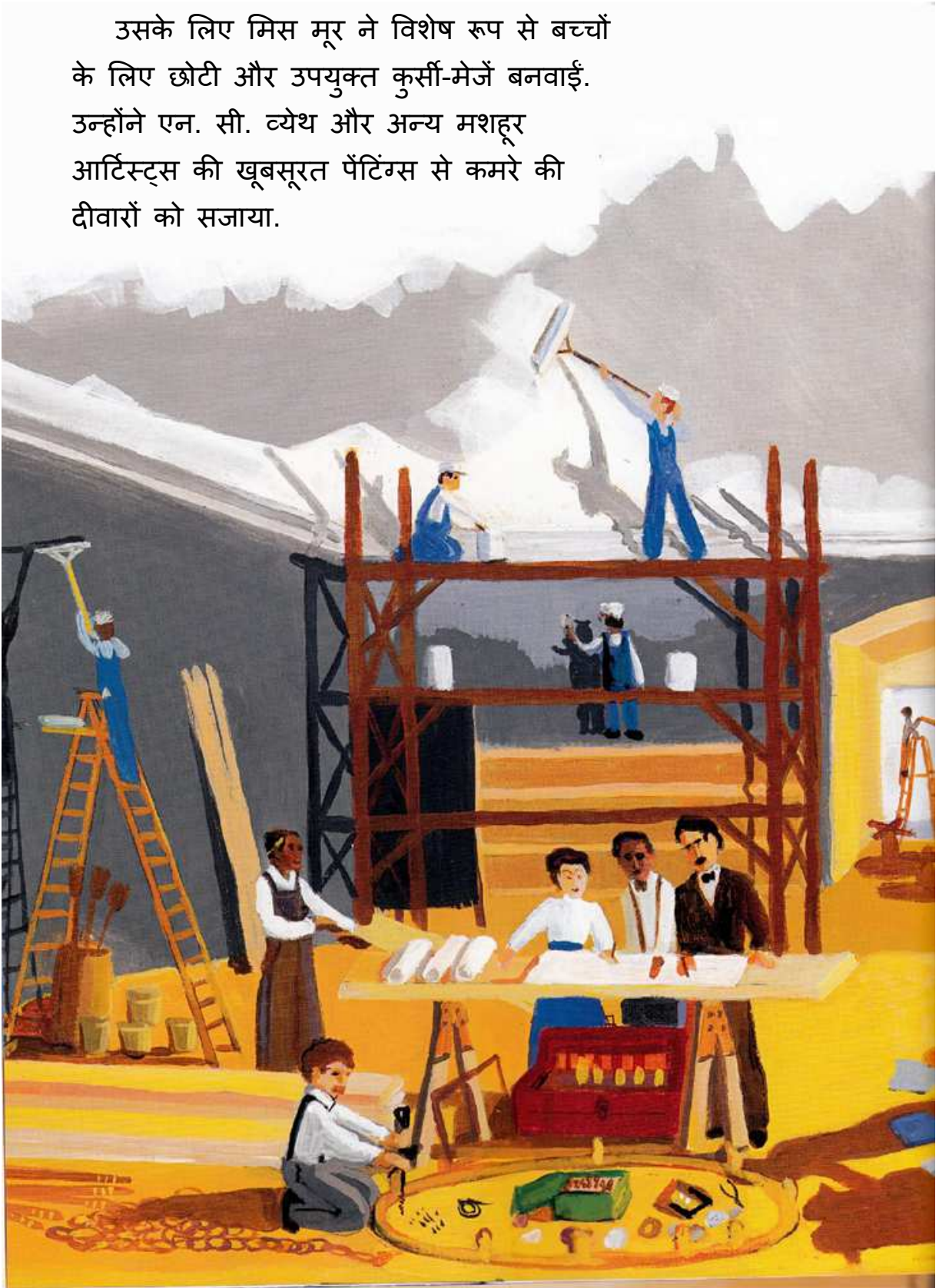
बच्चों की किताबें



तभी इस बात का ऐलान हुआ कि फिफ्थ-अविन्यू और फोर्टी-सेकंड स्ट्रीट पर नयी लाइब्रेरीज़ का निर्माण होगा. मिस मूर के लिए यह एक अच्छा मौका था. उन्होंने निश्चय किया कि इन लाइब्रेरीज़ में बच्चों के लिए एक केंद्रीय कमरा बनाने का - जो पूरे न्यूयॉर्क में सर्वश्रेष्ठ हो.



उसके लिए मिस मूर ने विशेष रूप से बच्चों
के लिए छोटी और उपयुक्त कुर्सी-मेजें बनवाईं.
उन्होंने एन. सी. व्येथ और अन्य मशहूर
आर्टिस्ट्स की खूबसूरत पेंटिंग्स से कमरे की
दीवारों को सजाया.



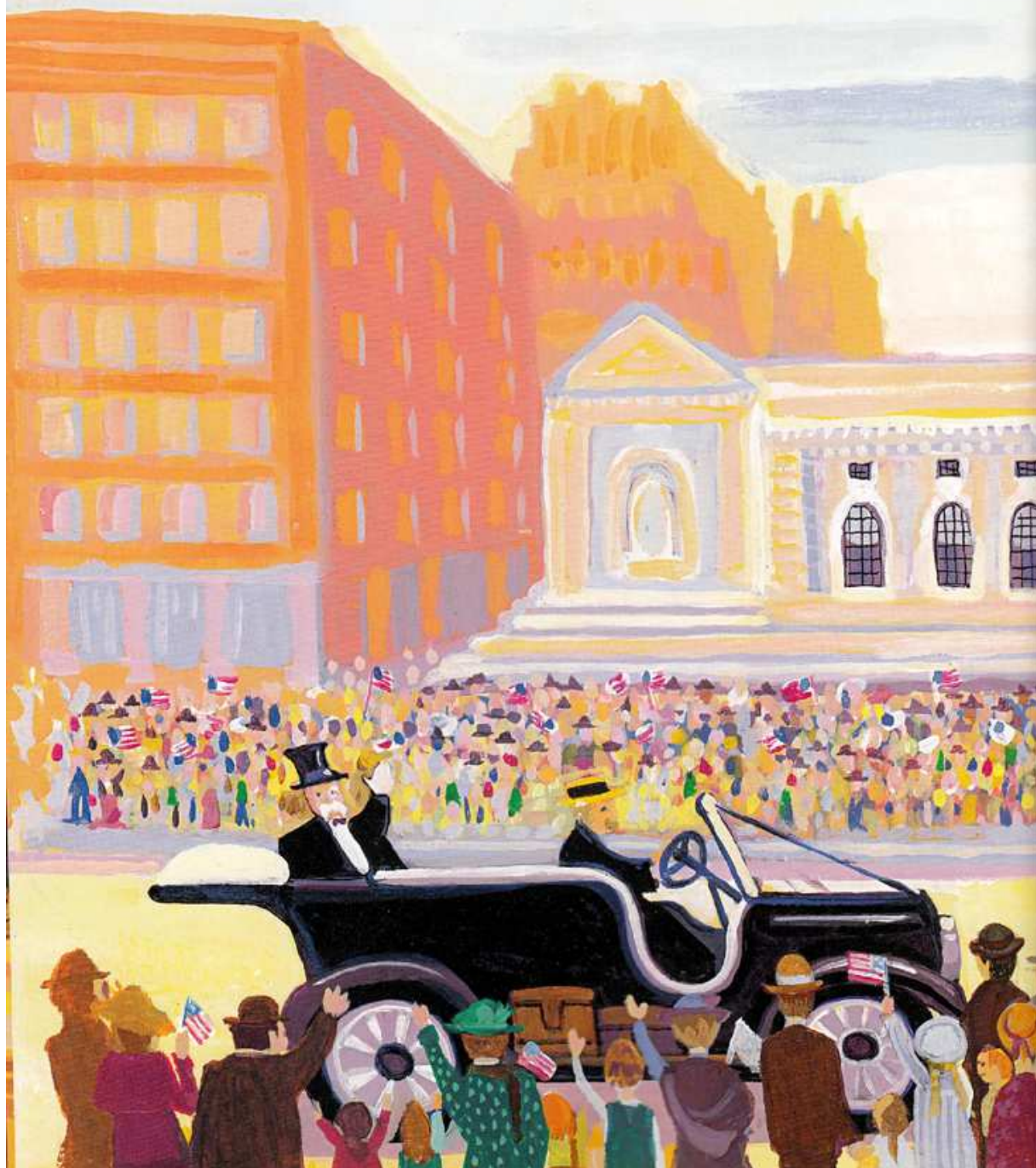
फर्श के लिए उन्होंने खासतौर
पर वेल्स से गुलाबी रंग के टाइल्स
मंगवाए.



उन्होंने समुद्र के सीप-शंखों और तितलियों के सुन्दर
संकलन को प्रदर्शित किया. उसके बाद उन्होंने शेल्फ्स को बच्चों
की सबसे अच्छी किताबों से भरा.



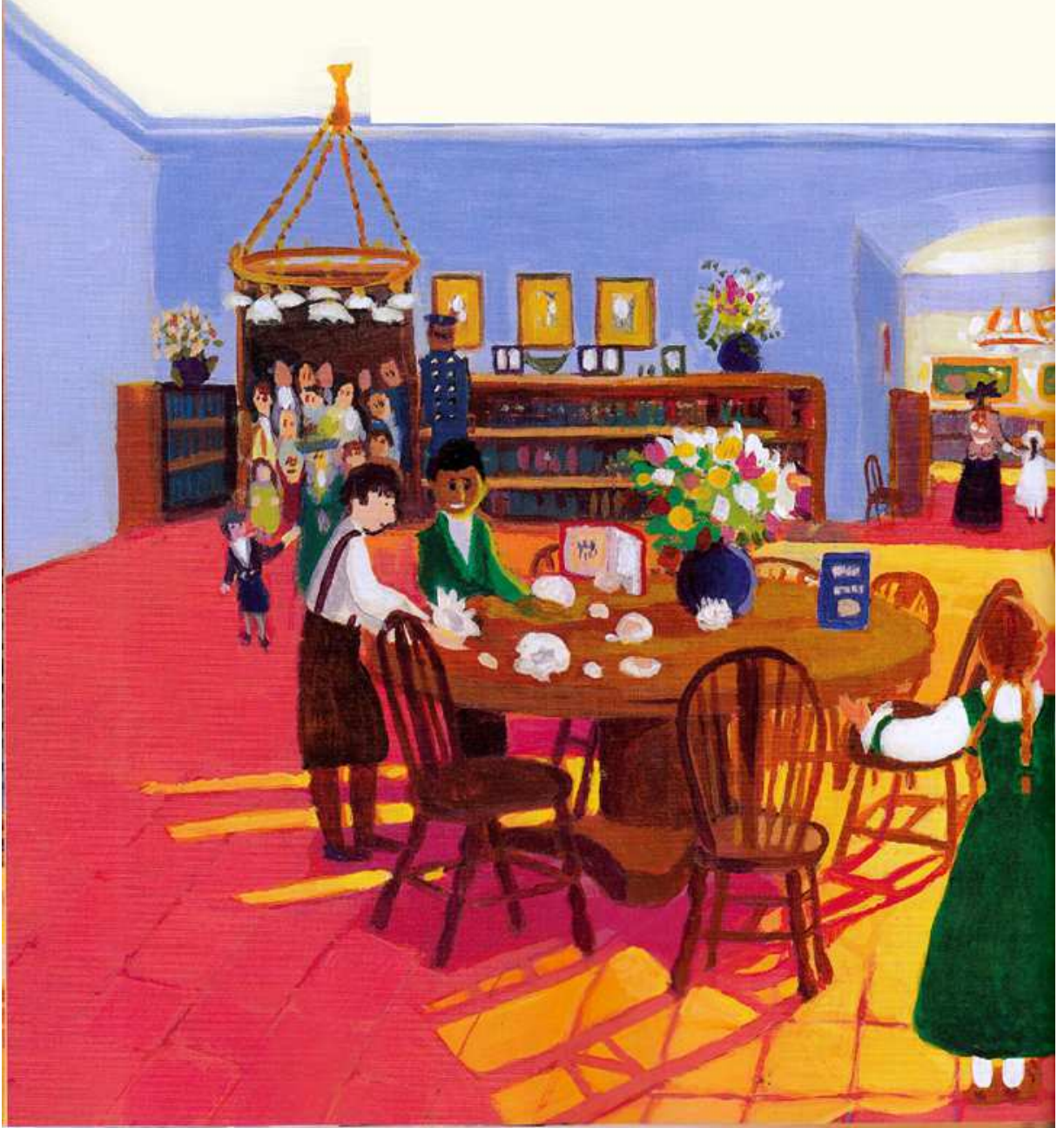
फिर 1911 में वसंत के एक गर्म दिन लाइब्रेरी का
उद्घाटन हुआ. न्यूयॉर्क पब्लिक लाइब्रेरी का पीतल का भारी
दरवाज़ा, पहली बार आम जनता के लिए खुला.



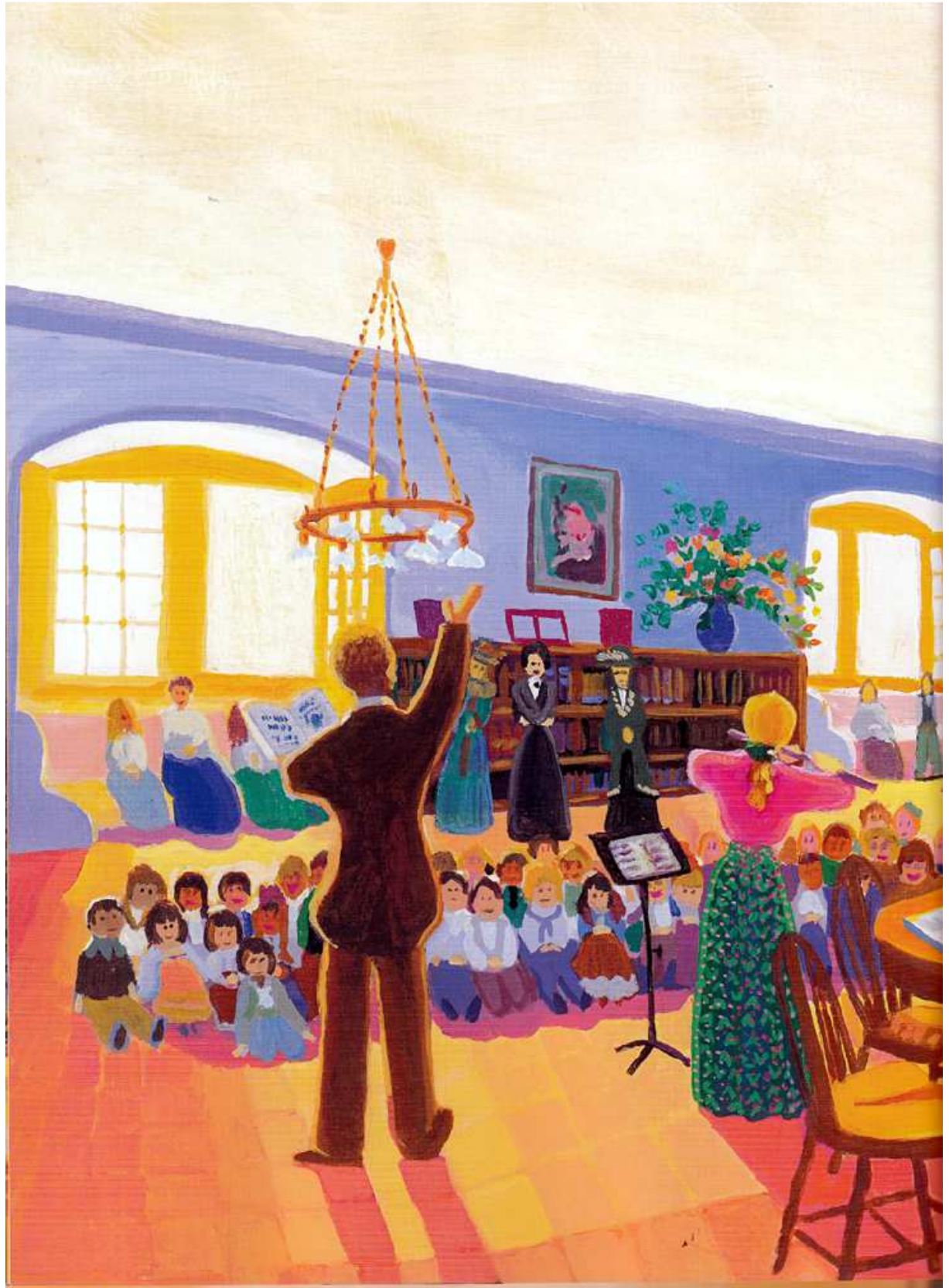
बाहर भीड़ का हुजूम लगा था. सड़कों के किनारे लोग ही लोग थे. तभी पुलिस का एक दस्ता अमरीका के राष्ट्रपति विलियम होवार्ड टेफ्ट को लाया और उन्होंने इस नयी विशाल लाइब्रेरी का उदघाटन किया.



अगले दिन जब लाइब्रेरी पब्लिक के लिए खुली तब न्यूयॉर्क के बच्चे, पहली बार उनके लिए खासतौर पर बने, विशेष कमरे में गए. बच्चे अलग-अलग भाषायों की सैकड़ों सचित्र किताबों में से अपनी मनपसंद किताब चुन सकते थे. और हर खिड़की के नीचे गद्दे और तकिये पड़े थे, जहाँ बच्चे आराम से बैठकर किताबें पढ़ सकते थे.

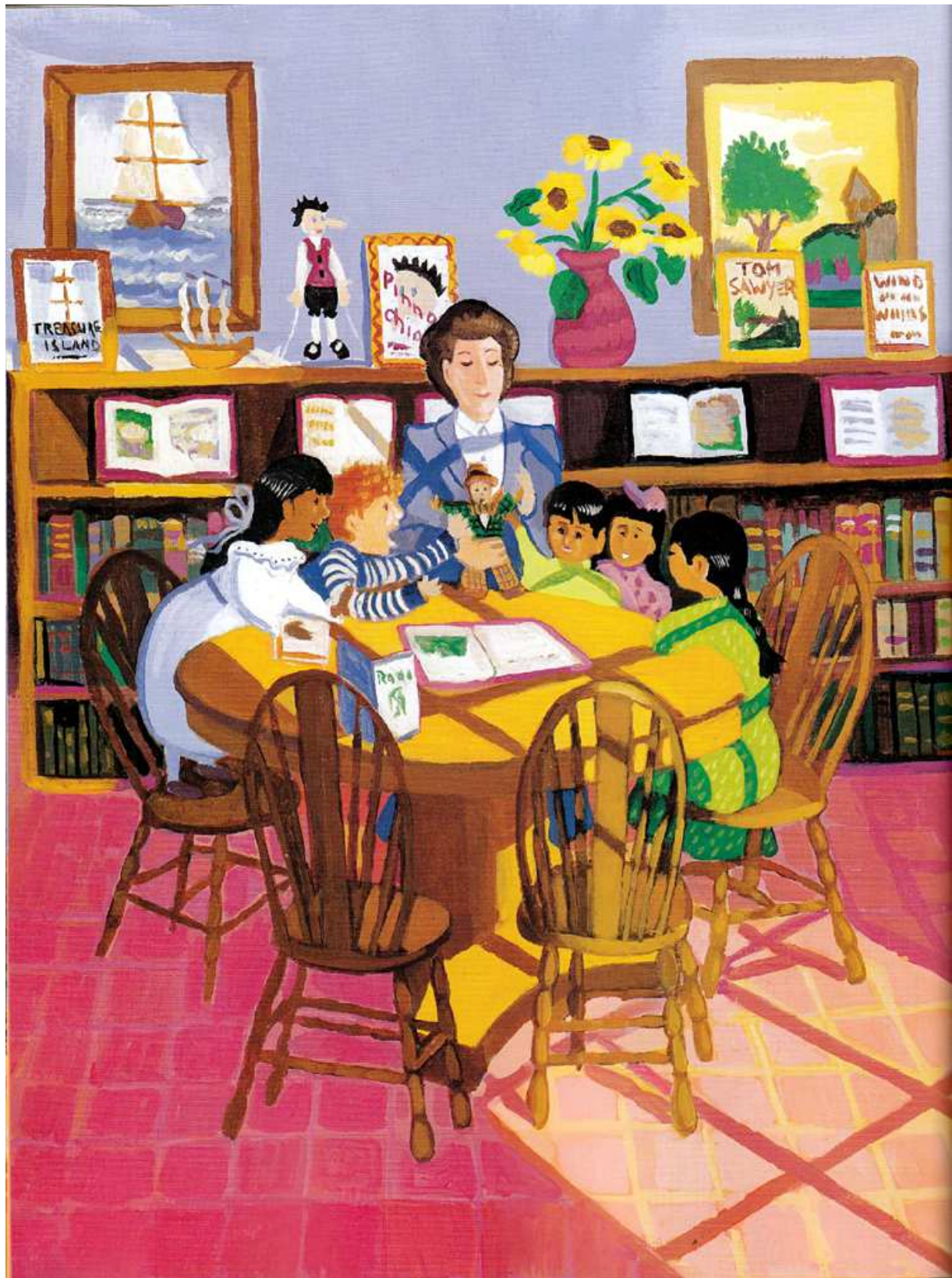








उस दिन के बाद से
बच्चों के कमरे में
रोज़ाना कुछ नयी और
अनूठी बात घटती. मिस
मूर ने वाचन-क्लब्स
आयोजित किए. उन्होंने
संगीतज्ञ, दस्तोंगों और
मशहूर लेखकों जैसे -
डॉक्टर सुएस को बच्चों
के मनोरंजन के लिए
लाइब्रेरी में आमंत्रित
किया.

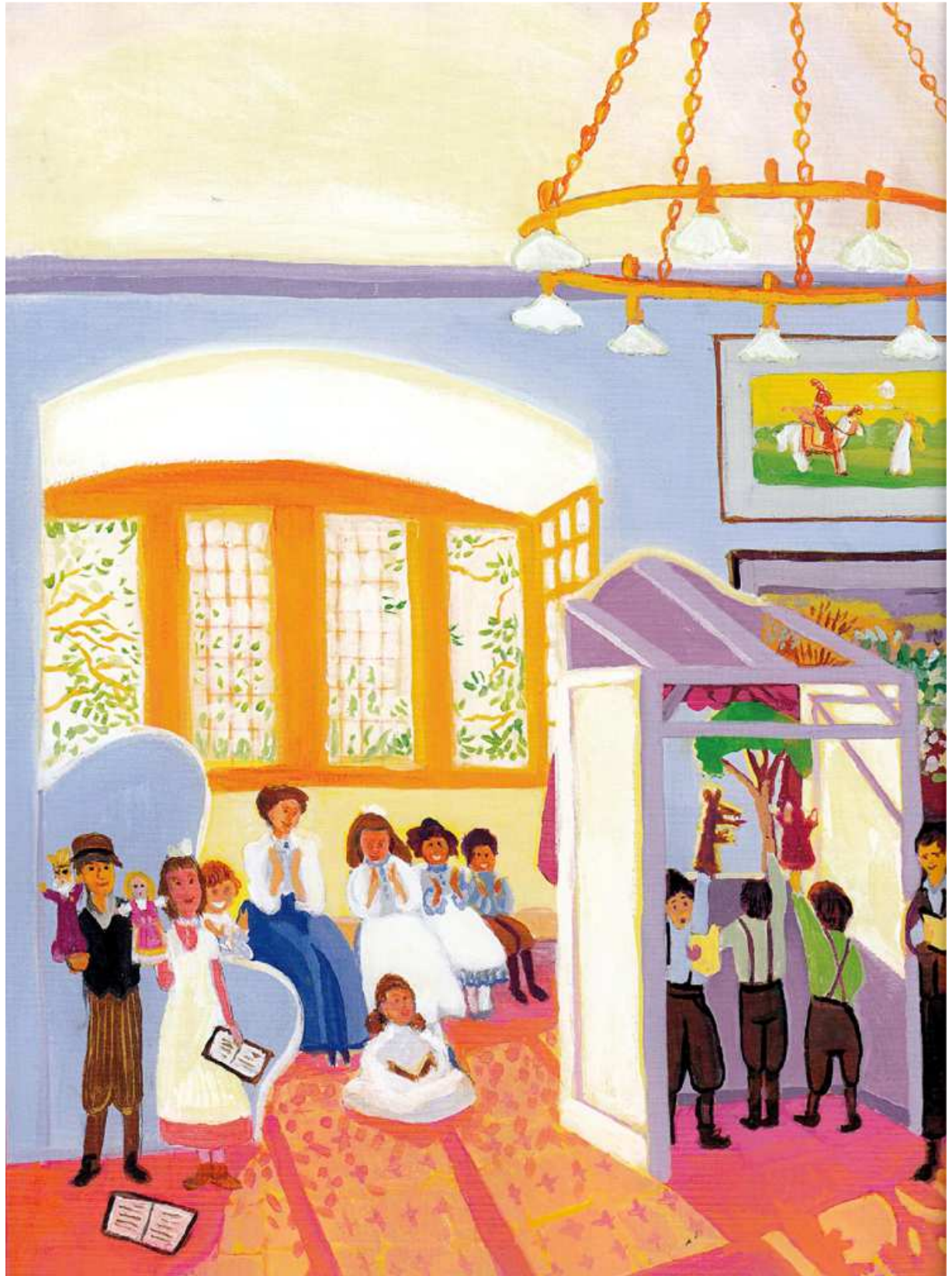




अक्सर मिस मूर अपने थैले में हाथ डालकर एक लकड़ी की गुड़िया बाहर निकालती थीं. गुड़िया का नाम था - निकोलस निक्कर-बौकर. जो बच्चे अंग्रेज़ी सीख रहे थे वो इस गुड़िया से इंग्लिश में बातचीत करने में कम शर्माते थे.

एक दिन बेल्जियम के राजा और महारानी न्यूयॉर्क पब्लिक लाइब्रेरी को देखने आये. "आप यहाँ "बच्चों का कमरा" ज़रूर देखें!" मिस मूर ने महारानी से कहा. उस दिन, गरीब और अमीर बच्चों ने, बच्चों के पुस्तकालय में राजा और महारानी के साथ हाथ मिलाया.

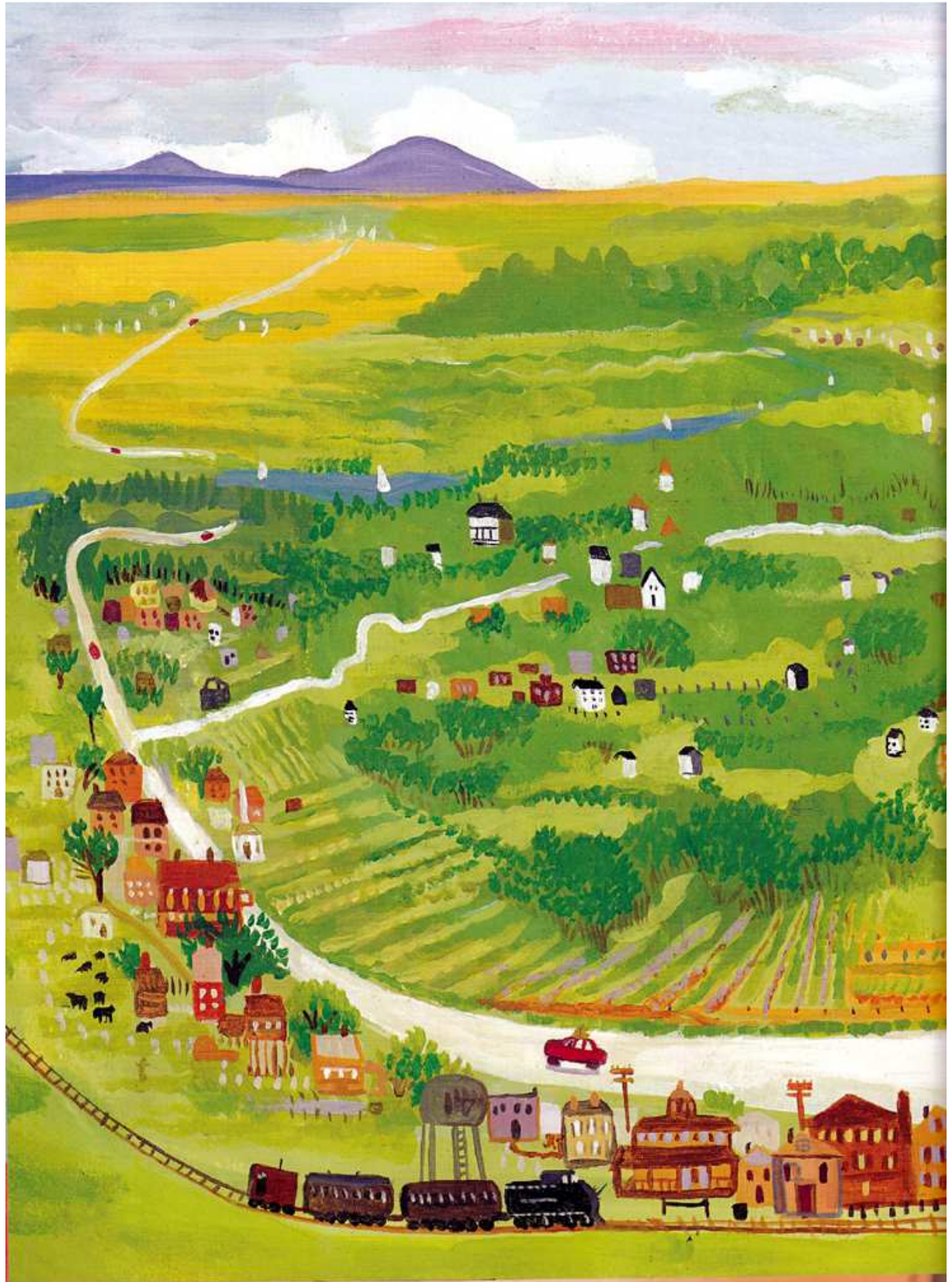




लाइब्रेरी की दीवारों से दूर, दो भीषण महायुद्ध, महामारी, और आर्थिक मंदी की बाढ़ आयी और चली गई. पर लाइब्रेरी में - बच्चों के कमरे में, हमेशा पर्याप्त गर्मी और रोशनी मौजूद होती. यहाँ बच्चे, अन्य बच्चों के साथ मिलते और रोचक चीज़ें सीखते थे.

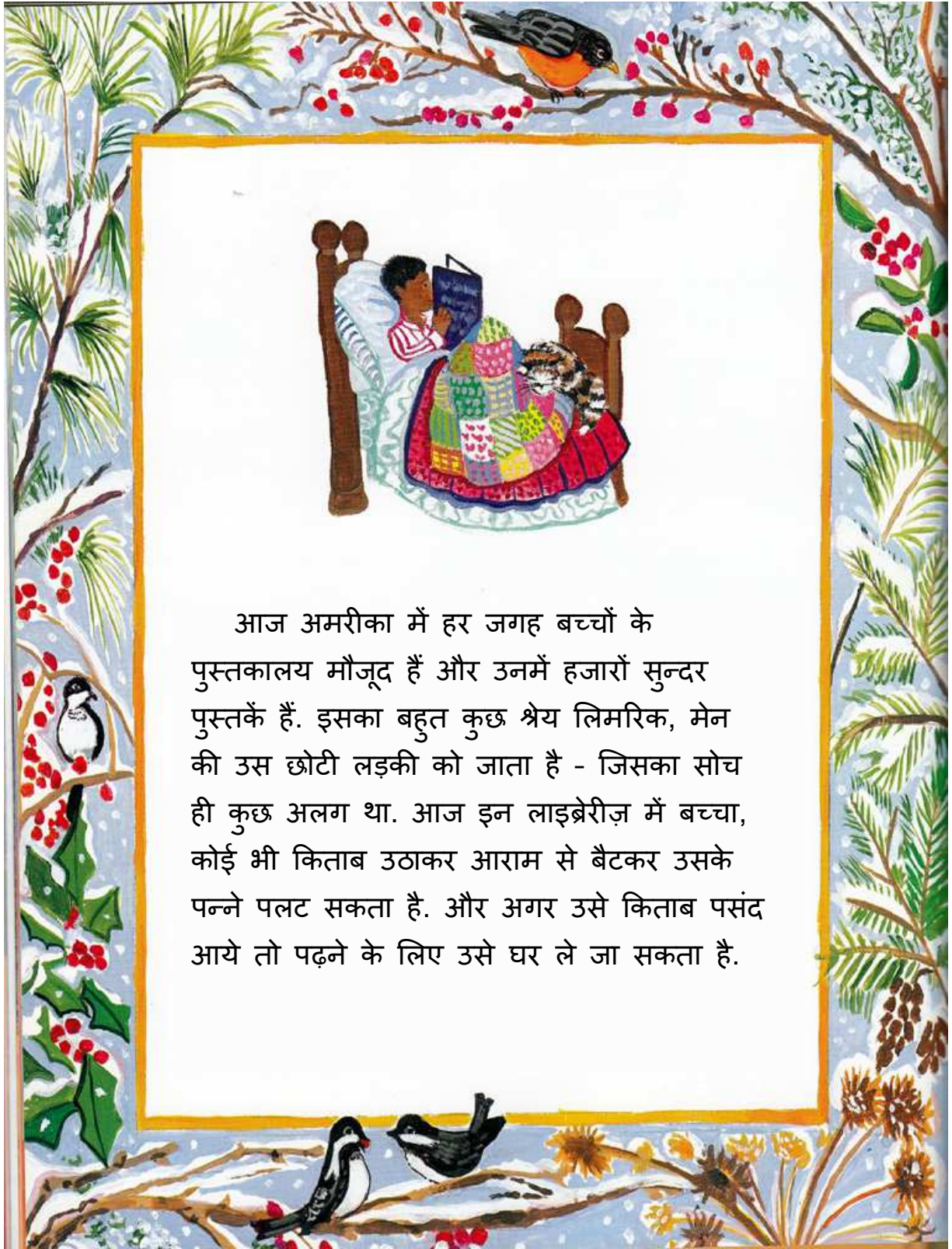
फिर धीरे-धीरे यह खबर चारों ओर फैली. पूरे अमरीका के बड़े और छोटे शहरों में मिस मूर के “बच्चों के कमरे” की नक़ल होने लगी. बात यहीं तक सीमित नहीं रही. इंग्लैंड, फ़्रांस, बेल्जियम, स्वीडन, रूस, भारत और जापान की लाइब्रेरीज़ ने भी मिस मूर की नक़ल की.



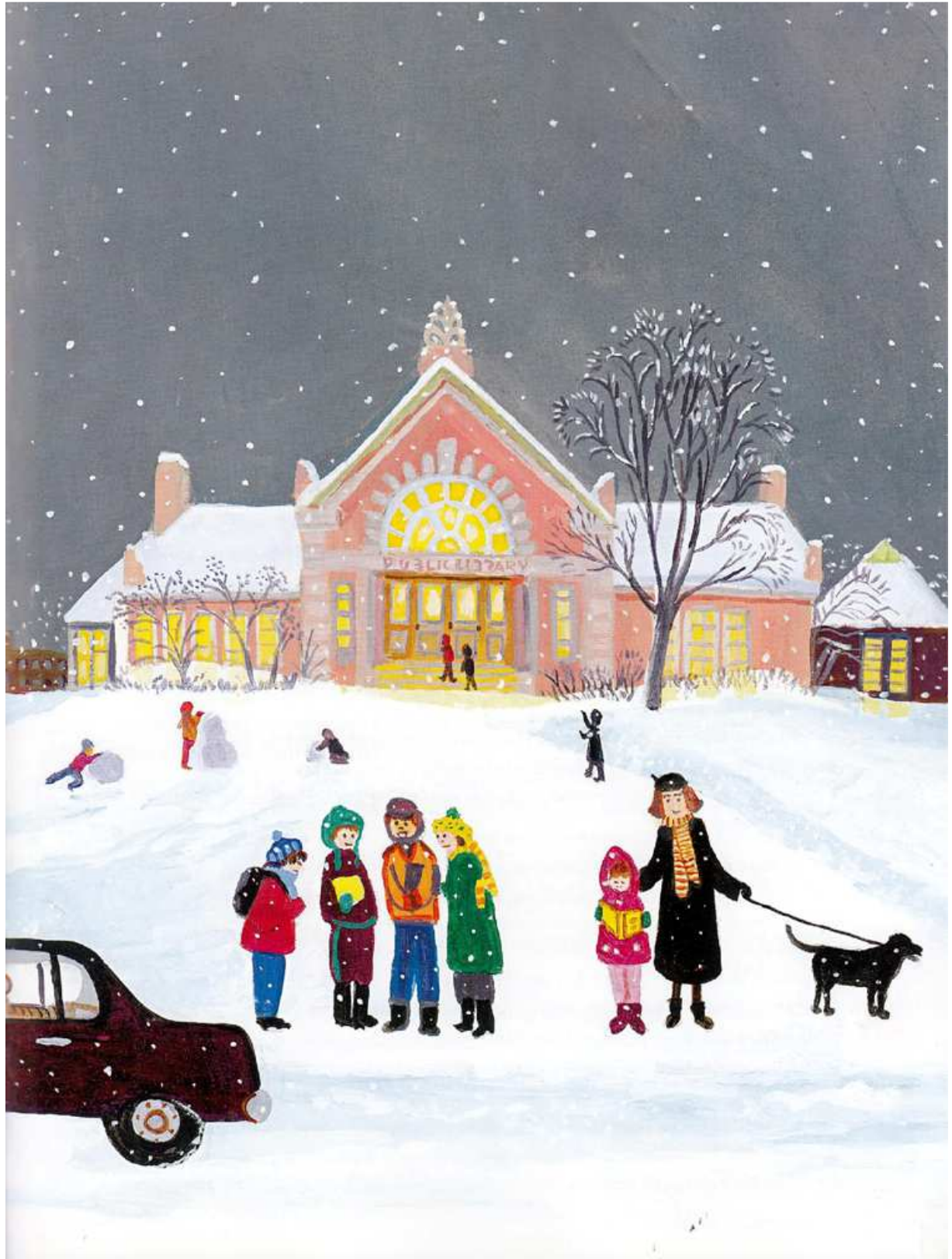


सत्तर बरस के उम्र में, मिस मूर के रिटायरमेंट का समय आया. कुछ लोगों ने सोचा कि अब मिस मूर घर पर बैठकर आराम करेंगी. पर मिस मूर का सोच कुछ अलग ही था. लाइब्रेरी के मित्रों ने एक सूटकेस में मिस मूर को, बच्चों की बेहतरीन किताबें भेंट कीं. उन्हें लेकर मिस मूर ने पूरे देश का दौरा किया और तमाम लोगों को “बच्चों के अच्छी लाइब्रेरी” बनाना और चलाना सिखाया.





आज अमरीका में हर जगह बच्चों के पुस्तकालय मौजूद हैं और उनमें हजारों सुन्दर पुस्तकें हैं. इसका बहुत कुछ श्रेय लिबरिक, मेन की उस छोटी लड़की को जाता है - जिसका सोच ही कुछ अलग था. आज इन लाइब्रेरीज़ में बच्चा, कोई भी किताब उठाकर आराम से बैठकर उसके पन्ने पलट सकता है. और अगर उसे किताब पसंद आये तो पढ़ने के लिए उसे घर ले जा सकता है.



The children of this world will never be able to repay the debt they owe [Anne Carroll Moore].
—WALTER DE LA MARE



दुनिया के सारे बच्चे मिलकर भी, मिस मूर के ऋण को नहीं चुका पाएंगे - वाल्टर डी ला मारे

मिस मूर के बारे में कुछ अन्य बातें

पथ-प्रदर्शक लाइब्रेरियंस

एनी कार्रोल मूर ने अकेले ही बच्चों के लिए लाइब्रेरीज़ स्थापित नहीं कीं. इस मुहिम के पीछे कई पथ-प्रदर्शक महिला लाइब्रेरियंस का भी योगदान था.

- 1887 में, **मिनर्वा सैंडर्स** ने पहली बार रहोड-आइलैंड की पब्लिक लाइब्रेरी में, बच्चों के लिए एक विशेष इलाका मनोनीत किया.
- 1894 में, मिल्वौकी की लाइब्रेरियन **लुटी स्टीअर्नस** ने पहली बार अपने भाषण में हर उम्र के बच्चे को लाइब्रेरी के अन्दर प्रवेश दिए जाने की अनुमति की अपील की.
- 1896 में, प्रैट इंस्टिट्यूट में **मैरी राइट पल्ममर** ने पहली बार लाइब्रेरी में बच्चों के लिए एक विशेष कमरा आयोजित किया और **मिस मूर** को उसके संचालन की पूरी छूट दी. यहाँ पर पहली बार मिस मूर ने “प्रतिज्ञा” को लागू किया.
- 1904 में, **कैरलाइन एम. हेविंस** ने “फ्री लाइब्रेरीज़” यानि मुक्त-पुस्तकालयों की दलील पेश की. उन्होंने हार्टफोर्ड, कनेक्टिकट में बच्चों के लिए लाइब्रेरी का एक खास कमरा भी शुरू किया.
- 1914 में, ब्रुकलिन की लाइब्रेरियन **क्लारा हंट** ने सिर्फ बच्चों के लिए एक लाइब्रेरी शुरू की.

शुरू में ब्रूकलाइन, बोस्टन, कैंब्रिज, मेसाचुसेट्स, डेन्वेर, ओमाहा, सीएटल, न्यू हैवन, डेट्रॉइट और पिट्सबर्ग में इधर-उधर, कहीं-कहीं ही बच्चों के लिए लाइब्रेरी के कमरे थे.

पर मिस मूर की अक्लमंदी, कल्पना और महत्वाकांक्षा और लेखकों, चित्रकारों, और प्रकाशकों के साथ उनके संबंधों के कारण, बच्चों के पुस्तकालयों का अद्भुत विकास हुआ. मशहूर न्यूयॉर्क पब्लिक लाइब्रेरी में काम करने का भी मिस मूर को बहुत फायदा हुआ. इस तरह वो पूरे देश और दुनिया में “बच्चों की लाइब्रेरीज़” का एक जाल बिछा पायीं.

If [the children's] room is now filled with much more sunshine, gaiety, beauty and common sense than ever before it is mainly through the efforts of Annie Carroll Moore who opened wide the windows and said, "A little less stuffiness right here would surely do none of us any harm."

—INSCRIPTION IN CHRISTMAS CAROLS BY
HENDRIK WILLEM VAN LOON AND GRACE CATAGNETTA



अगर बच्चों की लाइब्रेरी के कमरों में पहली की अपेक्षा आज, ज्यादा रोशनी, खुशी और सुन्दरता है तो इसका काफी कुछ श्रेय एनी कार्रोल मूर को जाता है। उन्होंने खिड़की को पूरा खोलते हुए कहा था, “बाहर की हवा अन्दर आने दो, उससे कम दम घुटेगा। उससे किसी को कोई नुकसान नहीं होगा。” - हेनरिक विल्लेम वन लूं और ग्रेस कैटगनेट्ट

कृपा कर, और ज्यादा किताबें!

1880 में, जब एनी कार्रोल मूर नौ साल की थीं, तब उनके शहर लिमरिक, मेन की लाइब्रेरी मात्र एक किराये का कमरा थी, जो उनके वकील पिता के दफ्तर के पास की बिल्डिंग में थी। उस समय की लाइब्रेरी में कुछ किताबें, बड़े लड़कों के लिए भी होती थीं। पर छोटे बच्चों और लड़कियों के लिए कोई किताबें नहीं होती थीं।

उस समय लाइब्रेरी निशुल्क (फ्री) नहीं थीं, और न ही आम लोग उनमें घुस सकते थे। लाइब्रेरी का उपयोग केवल फीस देने वाले सदस्य ही कर सकते थे। कभी-कभी कोई अमीर लाइब्रेरी को अपनी निजी किताबें भेंट कर देता था। पर उनमें बच्चों की किताबें बिलकुल नदारद होती थीं।

उस ज़माने में बच्चों की किताबों के महत्व को बहुत कम लोग ही समझते थे। पर मिस मूर उन्हें बहुत गंभीरता से लेती थीं। 1904 में, उन्होंने तब उपलब्ध, बच्चों की सर्वश्रेष्ठ किताबों की, एक लिस्ट तैयार की। कौन सी किताब अच्छी है? इसको लेकर उनके पक्के विचार थे और उन्हें वो बिना डरे व्यक्त करती थीं। वो पुस्तकों की समीक्षाएं लिखती थीं जो *हॉर्न-बुक*, *बुकमैन*, *न्यूयॉर्क हेराल्ड ट्रिब्यून* आदि पत्रिकाओं में छपते थे।

बहुत से नामी-गिरामी लेखक और चित्रकार, मिस मूर के मित्र थे। मर्सिया ब्राउन और एलेअनोर एस्तेस बच्चों के लेखक बनने से पहले, न्यूयॉर्क पब्लिक लाइब्रेरी में काम करते थे। जाने-माने लेखक कार्ल सैंडबर्ग, लुग्विग बेमेलमैनस और थियोडोर गिसेल (डॉक्टर सुएस) अक्सर लाइब्रेरी में बच्चों को कहानी सुनाने आते थे। मिस मूर प्रसिद्ध लेखिका बीटरिक्स पॉटर से भी मिलने गयीं। मिस मूर के बहुत से लेखक मित्र उन्हें बच्चों के खिलौने भेजते थे। पमेल्ला ट्रेवर्स ने उन्हें मैरी पोप्पिंस की छतरी भेंट की, जिसने बहुत सालों तक लाइब्रेरी में बच्चों के कमरे को निखारा।

मिस मूर ने खुद बहुत सी किताबें लिखीं। इनमें दो किताबें निकोलस के बारे में हैं। उनके निबंधों का एक संकलन भी है *माय रोड्स टू चाइल्डहुड*। 20 जनवरी 1961, में मृत्यु से पहले उन्होंने *द आर्ट ऑफ़ बीटरिक्स पॉटर* पुस्तक की प्रस्तावना लिखी।

दुनिया के सारे बच्चे मिलकर भी, मिस मूर के ऋण को चुका नहीं पाएंगे - वाल्टर डी ला मारे

जैन पिंगबरो ने अनेकों सुखद साल न्यूयॉर्क पब्लिक लाइब्रेरी में, एनी कार्रोल मूर के पत्रों को पढ़ते हुए बिताये. इन पत्रों में बीटरिक्स पॉटर का भेजा हुआ क्रिसमस-कार्ड भी मौजूद था. साथ में उस ज़माने के अनेक मशहूर लेखकों के पत्र भी थे. जैन बचपन से ही न्यूयॉर्क पब्लिक लाइब्रेरी में जाती रही हैं. इसलिए वहां इस पुस्तक पर शोध करना उनके लिए एक सुखद अनुभव था. वो अपने परिवार के साथ उटाह लेक सिटी में रहती हैं. बच्चों के लिए यह उनकी पहली किताब है.



डेबी ऐटवाल ने बच्चों की अनेकों पुस्तकें लिखी हैं और उनके चित्र भी बनाये हैं. इस पुस्तक पर शोध करते समय उन्होंने अपना काफी समय लाइब्रेरी में "बच्चों के कमरे" में बिताया. उससे उन्हें बहुत प्रेरणा मिली. डेबी, वाल्डोबोरो, मेन में अपने परिवार के साथ रहती हैं. उनका घर, एनी कार्रोल मूर के शहर लिमरिक से बहुत दूर नहीं है.